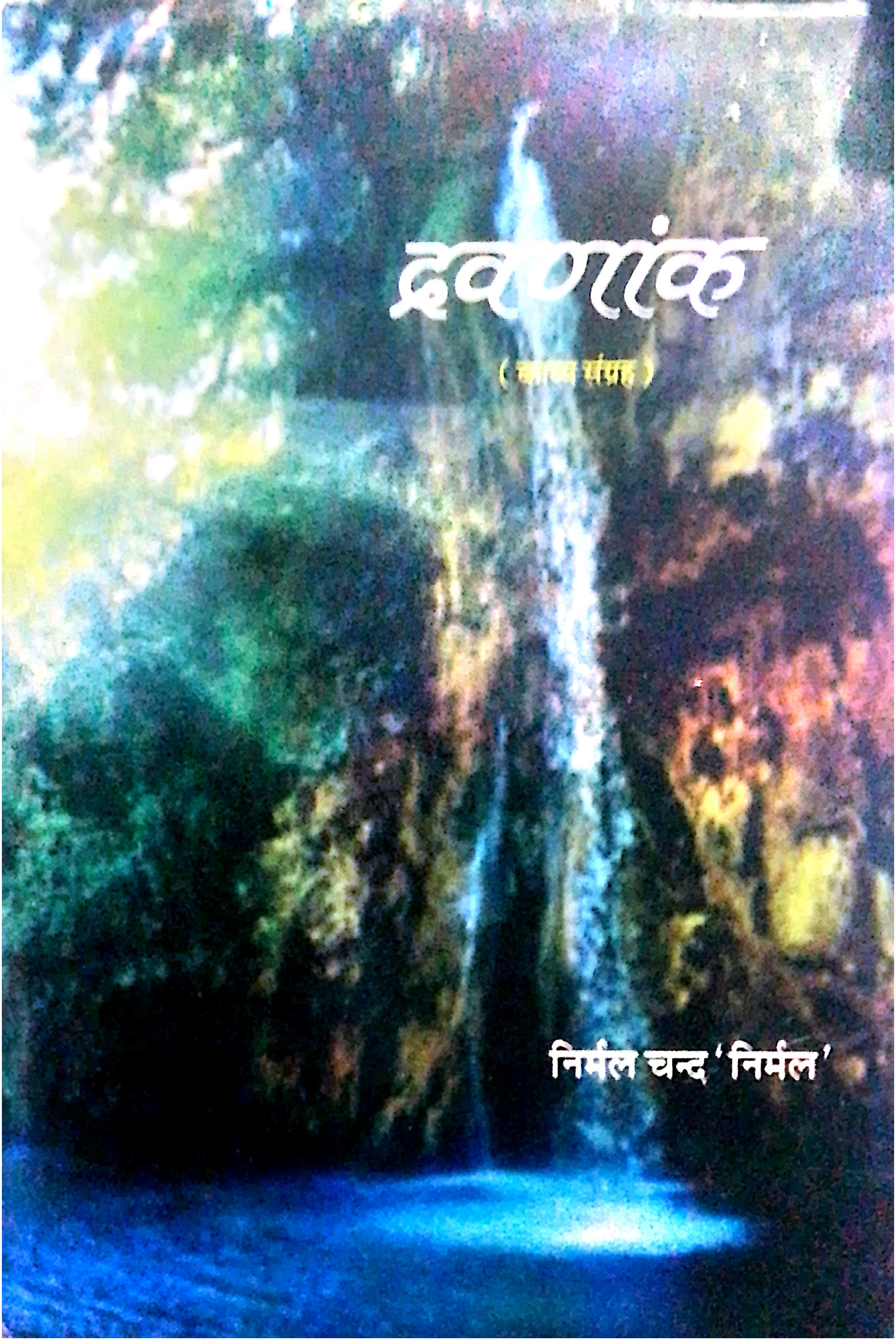

# द्रवणांक

निर्मल चन्द 'निर्मल'

Scanned with OKEN Scanner

# द्रवणांक

(काव्य संग्रह)

कवि: निर्मल चन्द 'निर्मल'

प्रकाशक

एन. डी. पब्लिकेशन

91, गौतम नगर, पश्चिम निशादपुरा

भोपाल (म.प्र.)

प्रथम संस्करण :

मार्च– 2011

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

मूल्य : 150 रू मात्र

मुद्रक : एन. डी. पब्लिकेशन

मोबाइल नं. : 9977324160

Scanned with OKEN Scanner

## सूची


| | | |
|---|---|---|
| (1) | बड़ी उपलब्धि | 1 |
| (2) | अंत:सुख | 2 |
| (3) | वह आदमी नहीं है | 3 |
| (4) | पढ़ाई | 4 |
| (5) | टटोलिये अपनी हीन ग्रन्थि को | 5 |
| (6) | माँ बहुत खुश है | 6 |
| (7) | खा सके जो गोलियाँ | 7 |
| (8) | भीगा हृदय | 8 |
| (9) | कविता बदस्तूर चलने दीजिए | 9 |
| (10) | बसंत आ गया है | 11 |
| (11) | कविता लिखूंगा | 12 |
| (12) | उड़ना लाजमी है | 14 |
| (13) | रामवती | 15 |
| (14) | बेटी की विदा | 16 |
| (15) | हम अपनी पीठ ठोक सकते हैं | 17 |
| (16) | डरता हूँ इनकी मृत्यु से | 18 |
| (17) | सुना - अनसुना | 19 |
| (18) | शब्द | 19 |
| (19) | कलम–भविष्य के लिए | 20 |
| (20) | गूंगे का गुड़ | 22 |
| (21) | चुप्पी | 23 |
| (22) | हमारा अहम् | 24 |
| (23) | इंतहा होने पर | 26 |
| (24) | वर्तमान आदर्श | 27 |
| (25) | असंगत दिशा बोध | 28 |




Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| (26) | देसी और विदेशी | 29 |
| (27) | खूंटा | 31 |
| (28) | संसार ऐसे ही चलता है | 32 |
| (29) | राम राज्य | 33 |
| (30) | नये मंदिर | 35 |
| (31) | कुर्सी के पाये | 37 |
| (32) | वर्तमान में | 39 |
| (33) | सनातन इतिहास | 40 |
| (34) | एक सौन्दर्य बोध | 41 |
| (35) | राम की अयोध्या | 43 |
| (36) | स्मृति सुगन्ध | 45 |
| (37) | सम्मान | 46 |
| (38) | इनकी पूजा करूं | 47 |
| (39) | स्वतंत्रता है | 49 |
| (40) | इतिहास गवाह है | 50 |
| (41) | हास्य | 52 |
| (42) | आदमी की खुशबू | 54 |
| (43) | गीत लिखते रहिए | 55 |
| (44) | कितने संसार | 56 |
| (45) | गणना कीजिए | 57 |
| (46) | समय प्रतीक्षारत है | 58 |
| (47) | संदेह | 59 |
| (48) | शुद्ध कितना जिये | 60 |
| (49) | कविता की आँखें पैनी होती हैं | 61 |
| (50) | सुलझ जाता है मौसम | 63 |
| (51) | वैभव | 64 |
| (52) | मुद्राशक्ति | 65 |
| (53) | पश्चाताप/समर्पण/हाथ मलता रह जाएगा | 67 |




Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| (54) | पेट भरने के लिए | 68 |
| (55) | ज्ञान | 69 |
| (56) | विकल्प नहीं | 71 |
| (57) | यथार्थ या भ्रम | 72 |
| (58) | दो दिशायें | 73 |
| (59) | समस्याएं | 74 |
| (60) | निर्माण | 75 |
| (61) | धुरी | 76 |
| (62) | आप तो बुद्धिमान है | 77 |
| (63) | हमारी आँखें | 78 |
| (64) | समर्पण | 79 |
| (65) | अवसर | 80 |
| (66) | छद्म के रूप | 81 |
| (67) | नन्नू होटल वाला | 82 |
| (68) | कविता के बहाने | 83 |
| (69) | आधुनिक साहित्य | 84 |
| (70) | कविता की तलाश | 87 |
| (71) | सुरक्षित नाप | 90 |
| (72) | भेड़िया आया | 91 |
| (73) | विसर्जन | 92 |
| (74) | व्यक्तित्व | 93 |
| (75) | पूरक होते हैं | 94 |
| (76) | मोहलत तो दें | 95 |
| (77) | साहस की देन है | 96 |
| (78) | क्या सुनूं क्या देखूं | 97 |
| (79) | शुद्ध भाव से | 98 |
| (80) | आप अपना रोल निश्चित कीजिए | 99 |
| (81) | सभ्यता का प्रवेश द्वार है | 101 |




Scanned with OKEN Scanner

(82) नारी उत्थान 102
(83) या छल रहा है स्वयम् को 104
(84) बशर्ते हम जाग्रत हों 105
(85) हम भोगेंगे अभिशाप 106
(86) जान हथेली पर 108
(87) सदियाँ बनती बिगड़ती हैं 109
(88) क्षुद्रता की विदाई 111
(89) महाकवि पद्माकर 112
(90) मृत्यु से पूर्व 113
(91) प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या 114
(92) कामरेड बैसाखिया 115
(93) दीवाली 116
(94) दैवयोग का जुमला 117
(95) लोकतंत्र बनाम वणिकतंत्र 118
(96) ये संसार कर्मठों का है 119
(97) निरंक बैठे हैं हम 120
(98) चतुर दिखने के लिए 121
(99) आदमी तो वही है 122
(100) माँ चली गई 123
(101) स्मृतियाँ 125
(102) सुविधा भोगियों के लिए 126
(103) जब आप खड़े हुए 127
(104) चुनाव 128
(105) पागलखाने का मुआयना 129
(106) कलम को बल दो 136
(107) नये नये रूप 141

Scanned with OKEN Scanner

# प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या

निष्क्रिय भावुकता
निष्क्रिय दया
निष्क्रिय प्रगतिशीलता
कलम की भागीदारी
तक सीमित है और
मंचीय भाषणों तक।

कोरेपन से संसार
नहीं संवरता
आदमी से आदमी की
दूरी बढ़ती हैं।

एकता और सात्विकता
के तथ्य
किताबों में
सिमट कर रह जाते हैं
अमली जामा नहीं पहिन पाते
क्रिया शीलता मात्र
उपदेशों की
पटरी पर दौड़ती है।

संसार उपदेशों से
कैसा चलता है
आज हम और आप
देख ही रहे हैं।

प्रत्यक्ष को
प्रमाण की क्या आवश्यक

❖



Scanned with OKEN Scanner

ाम - निर्मल चन्द 'निर्मल'

न्म - 6 मार्च, 1931, चकराघाट, सागर ( म.प्र. )


**पूर्व प्रकाशित काव्य कृतियाँ -**

1. उठाओ कुदाली
2. और कुछ नहीं हुआ
3. गीत वही लिख पाता है
4. गीत है ये जिन्दगी
5. कुछ ऐसे लोग हुआ करते
6. याद नहीं बिसरी
7. जुगनुओं के पास भी ईमान है
8. प्रीत के सुख-दुख घनेरे
9. पसीना बोलता है
10. गुड़िया पूछ रही मम्मी से
11. प्रेम रूपी रंग कितने

विशेष - श्री दिग्विजय सिंह द्वारा दाजी सम्मान, आल इंडिया स्टूडेन्ट्स फेडरेशन की तरफ से श्री शिवराज सिंह द्वारा सम्मानित, दिव्य रजत अलंकरण सम्मान, मध्यप्रदेश लेखक संघ की ओर से सारस्वत सम्मान। विद्यापुरम साहित्य परिषद द्वारा पदमाकर सम्मान । इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय, प्रादेशिक और स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं द्वारा साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित । रेडियो एवं टी.व्ही. से काव्य पाठ-प्रसारण।


स्थाई पता - पुर्वियाऊटौरी, सागर ( म.प्र. )

फोन - 222756, 409058, 9993949714



ND Publication, 9977324160



Scanned with OKEN Scanner